वांगारी मथाई

जिस महिला ने करोड़ों पेड़ लगाए



वांगारी मथाई

जिस महिला ने करोड़ों पेड़ लगाए

फ्रॉक प्रीवोट



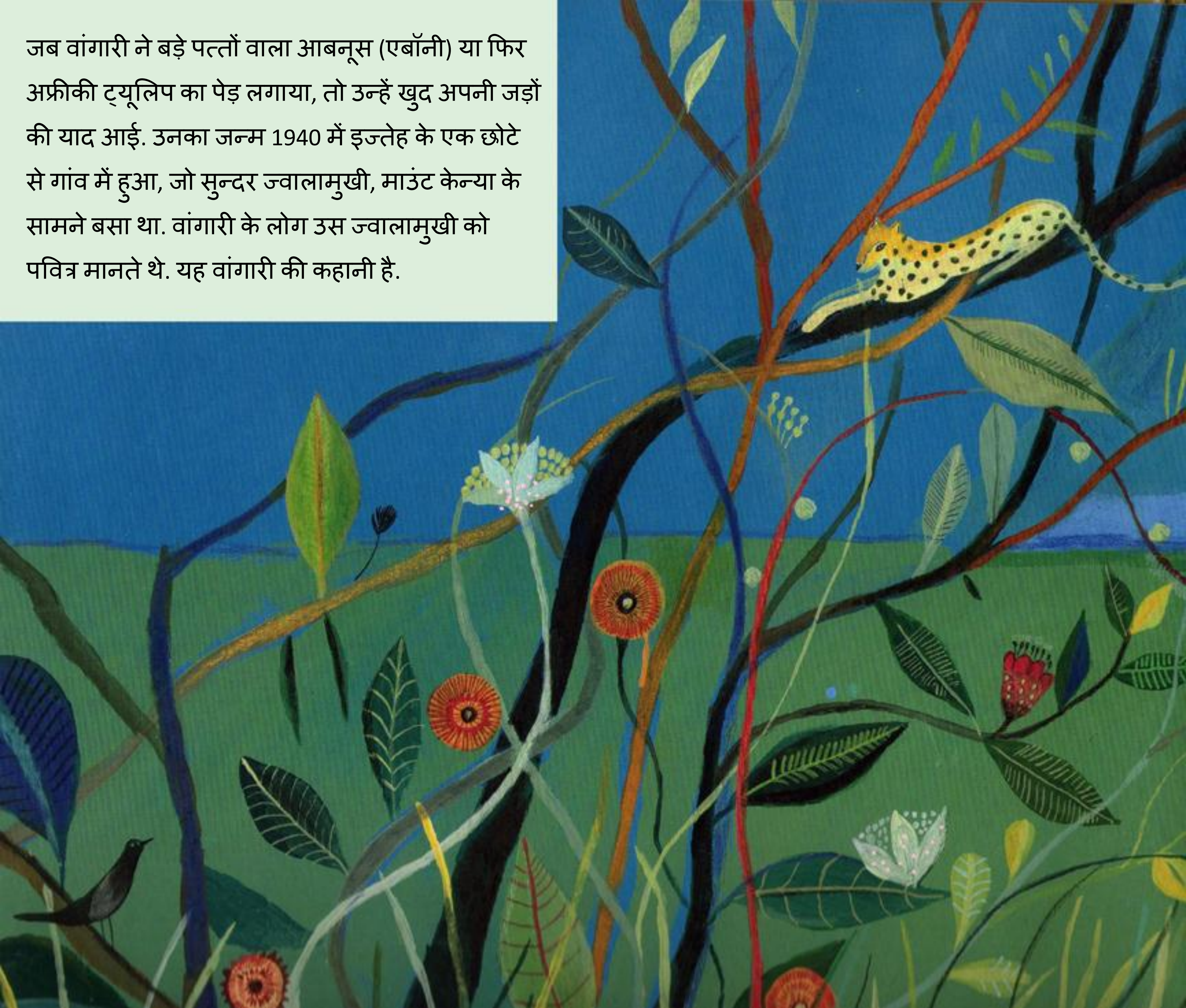
ऐसा लगता है जैसे वांगारी मथाई अभी भी जीवित हैं, क्योंकि उनके द्वारा लगाए गए पेड़ अभी भी लगातार बढ़ रहे हैं. जो लोग वांगारी की तरह पृथ्वी की परवाह करते हैं, वो उन्हें चार अलग-अलग भाषाओं - किकू, स्वाहिली, अंग्रेजी और जर्मन में बोलते हुए सुन सकते हैं. वांगारी ने अपने जीवन में कई महत्वपूर्ण लोगों के साथ काम किया.

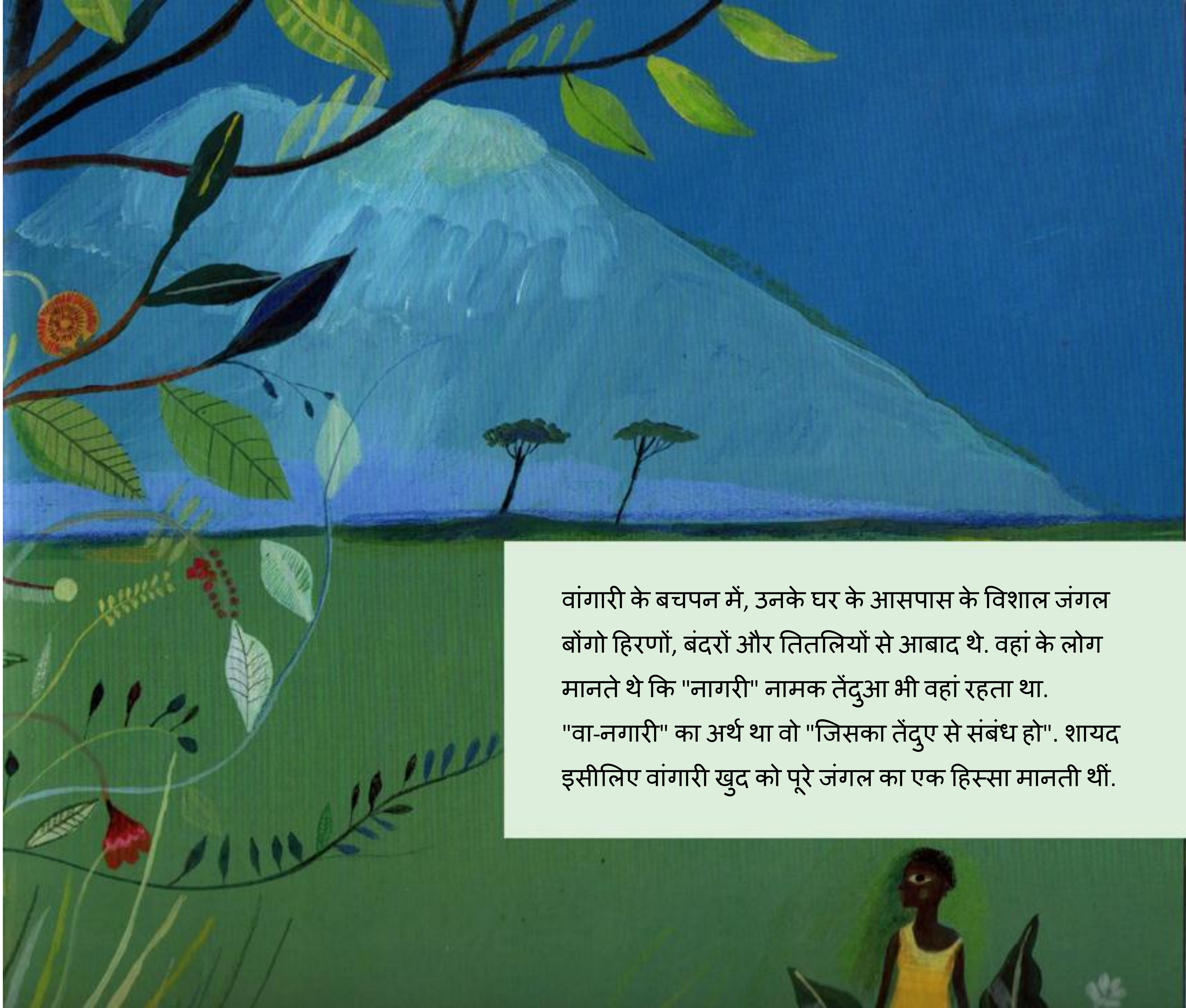


वांगारी ने गांव की कई महिलाओं को प्रोत्साहित किया. उन्होंने उनके साथ लाल मिट्टी में गड्ढे खोदे - जिनमें उन्होंने आज के लिए खुशी और आने वाले कल के लिए आशा के बीज बोए.

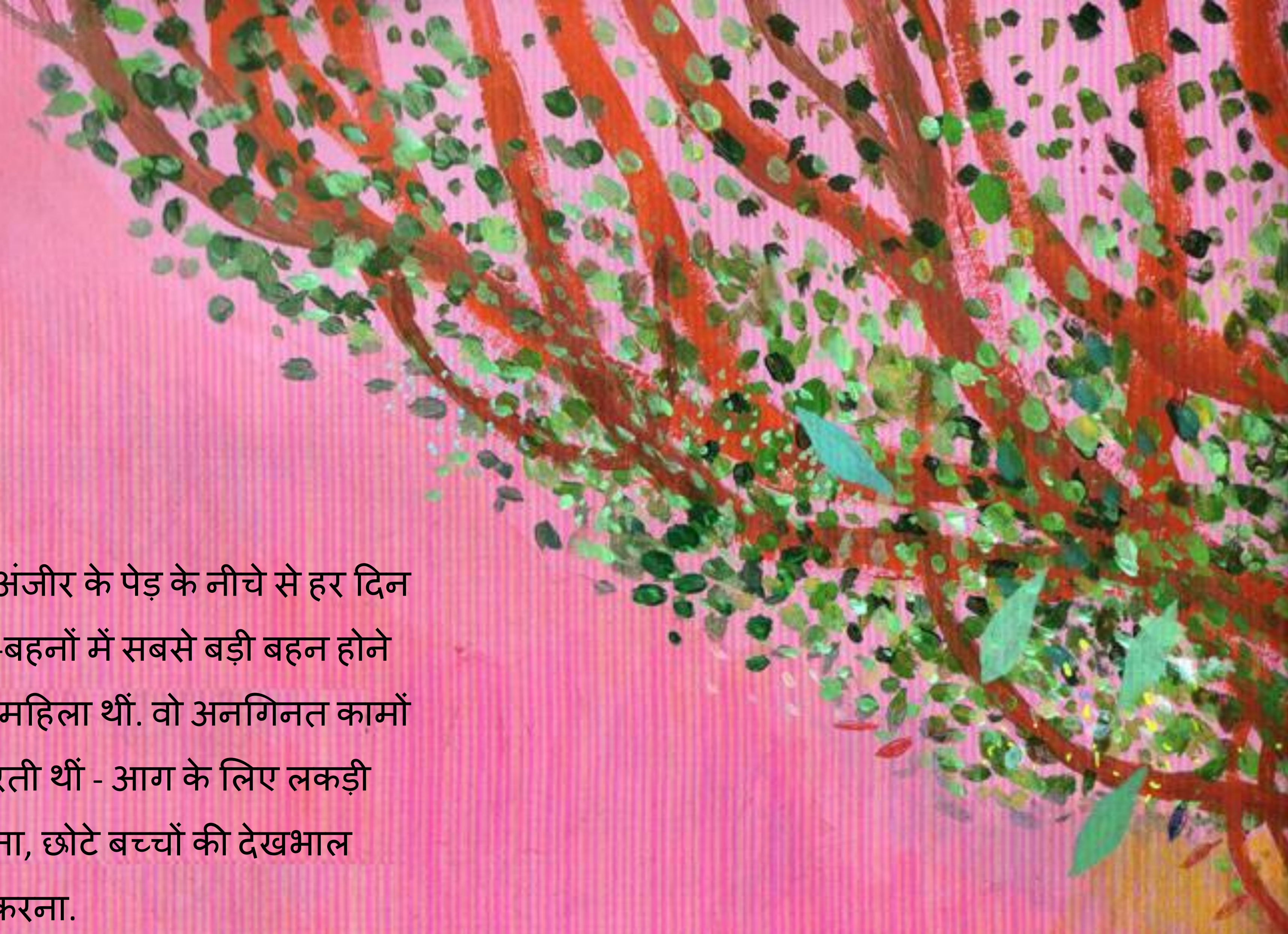


जब वांगारी ने बड़े पत्तों वाला आबनूस (एबॉनी) या फिर अफ्रीकी ट्यूलिप का पेड़ लगाया, तो उन्हें खुद अपनी जड़ों की याद आई. उनका जन्म 1940 में इज्तेह के एक छोटे से गांव में हुआ, जो सुन्दर ज्वालामुखी, माउंट केन्या के सामने बसा था. वांगारी के लोग उस ज्वालामुखी को पवित्र मानते थे. यह वांगारी की कहानी है.



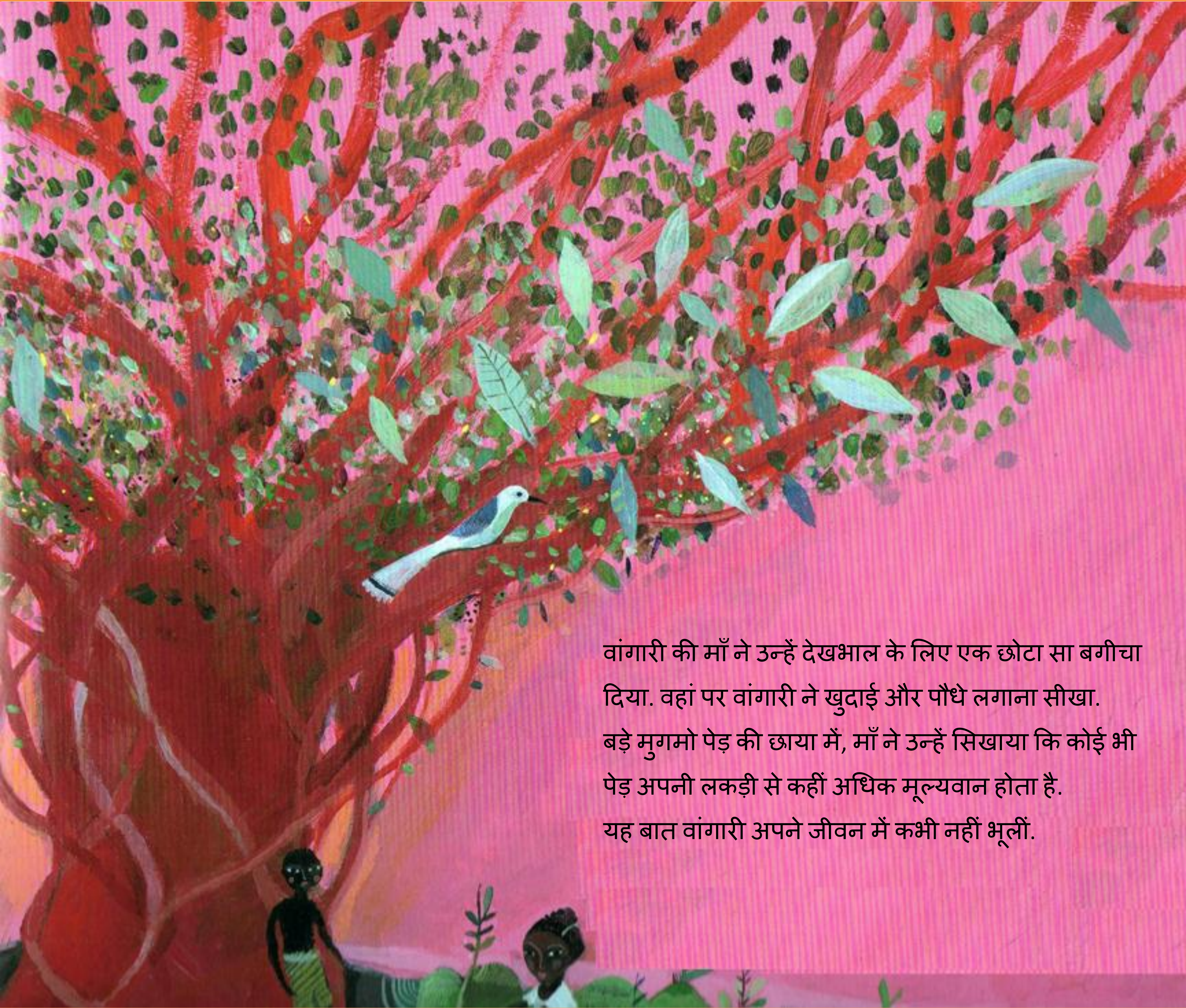


वांगारी के बचपन में, उनके घर के आसपास के विशाल जंगल बोंगो हिरणों, बंदरों और तितलियों से आबाद थे. वहां के लोग मानते थे कि "नागरी" नामक तेंदुआ भी वहां रहता था. "वा-नगारी" का अर्थ था वो "जिसका तेंदुए से संबंध हो". शायद इसीलिए वांगारी खुद को पूरे जंगल का एक हिस्सा मानती थीं.



वांगारी बड़े मुगमो यानि अंजीर के पेड़ के नीचे से हर दिन पानी लाती थीं. पांच भाई-बहनों में सबसे बड़ी बहन होने के नाते, वो घर की दूसरी महिला थीं. वो अनगिनत कामों में अपनी माँ की मदद करती थीं - आग के लिए लकड़ी इकट्ठा करना, खाना बनाना, छोटे बच्चों की देखभाल करना और खेत में काम करना.





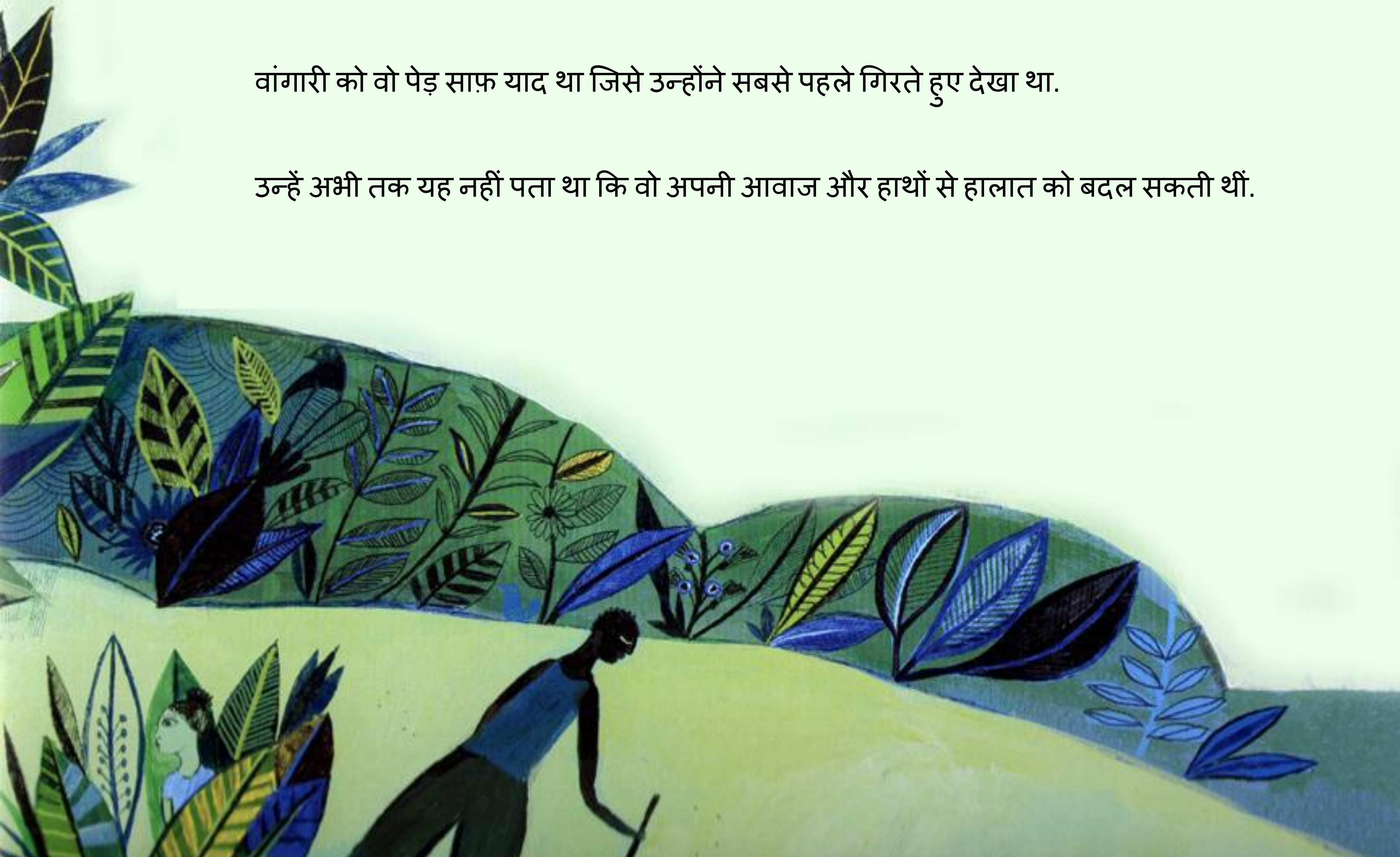
वांगारी की माँ ने उन्हें देखभाल के लिए एक छोटा सा बगीचा दिया. वहां पर वांगारी ने खुदाई और पौधे लगाना सीखा. बड़े मुगमो पेड़ की छाया में, माँ ने उन्हें सिखाया कि कोई भी पेड़ अपनी लकड़ी से कहीं अधिक मूल्यवान होता है. यह बात वांगारी अपने जीवन में कभी नहीं भूलीं.



वांगारी के पिता सत्ताधारी ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के एक अफसर - सर नेलन के लिए काम करते थे. ब्रिटिश लोगों ने केन्या की सबसे अच्छी भूमि खुद अपने लिए हड़प ली थी और उन्होंने हरेक केन्या निवासी को ईसाई नाम दिए थे. उसके नतीजतन, वांगारी को लोग बचपन में "मरियम" बुलाते थे. अंग्रेज़ों ने पेड़ काटे और उनकी जगह पर चाय के बागान लगाकर वे अमीर बने.

वांगारी को वो पेड़ साफ़ याद था जिसे उन्होंने सबसे पहले गिरते हुए देखा था.

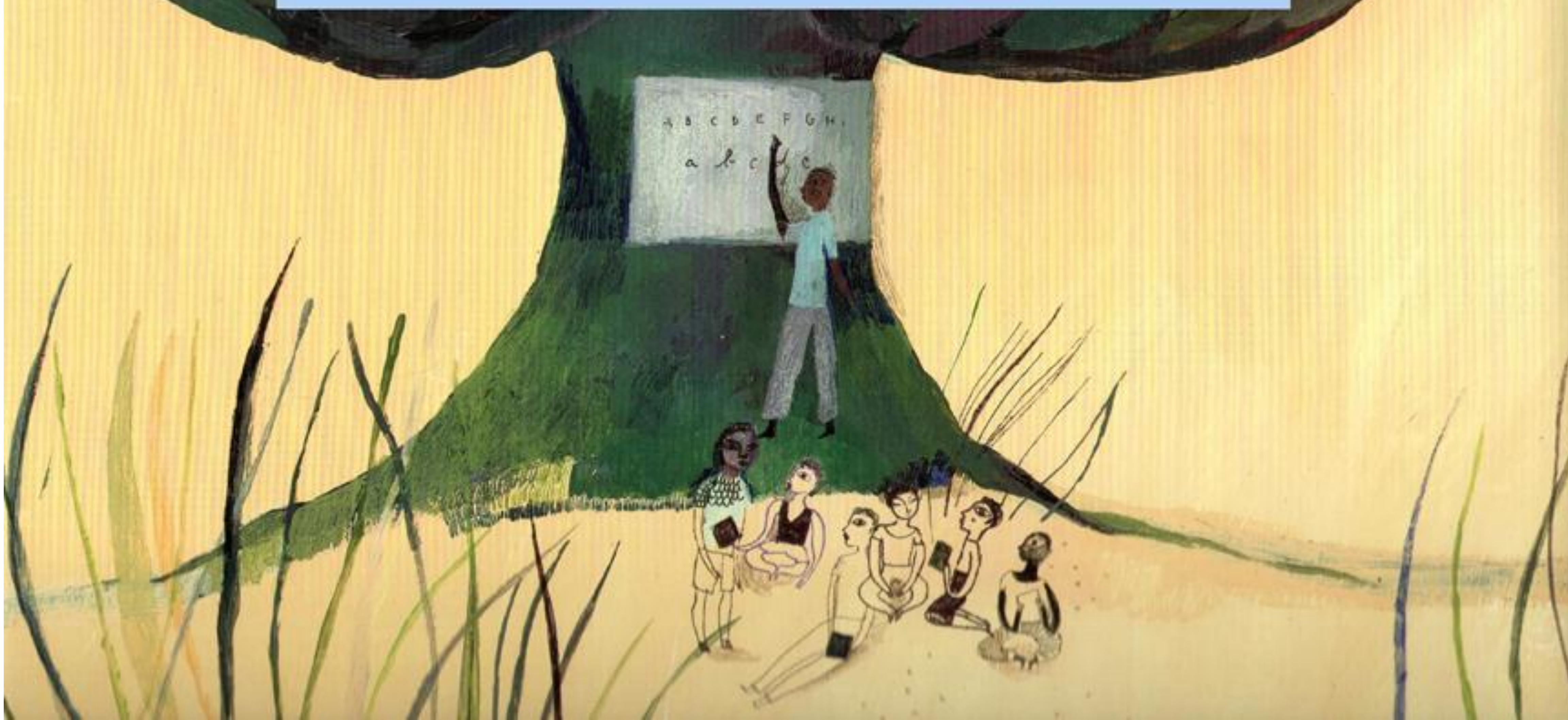
उन्हें अभी तक यह नहीं पता था कि वो अपनी आवाज और हाथों से हालात को बदल सकती थीं.



एक शाम मिट्टी की दीवारों और सूखे गोबर से बने उनके छोटे घर में, वांगारी के बड़े भाई नादितु ने अपनी मां से एक बुनियादी सवाल पूछा:
"वांगारी, स्कूल क्यों नहीं जाती?“

वांगारी को उसका जवाब पता था. बेटियों को शादी से पहले अपनी माँ की मदद करनी होती थी और उसके बाद खुद अपने बच्चों की परवरिश.

इस प्रश्न को पूछकर नादितु ने चीजों को बुनियादी तौर पर बदल डाला. उसे इसका कोई अंदाज़ नहीं था.

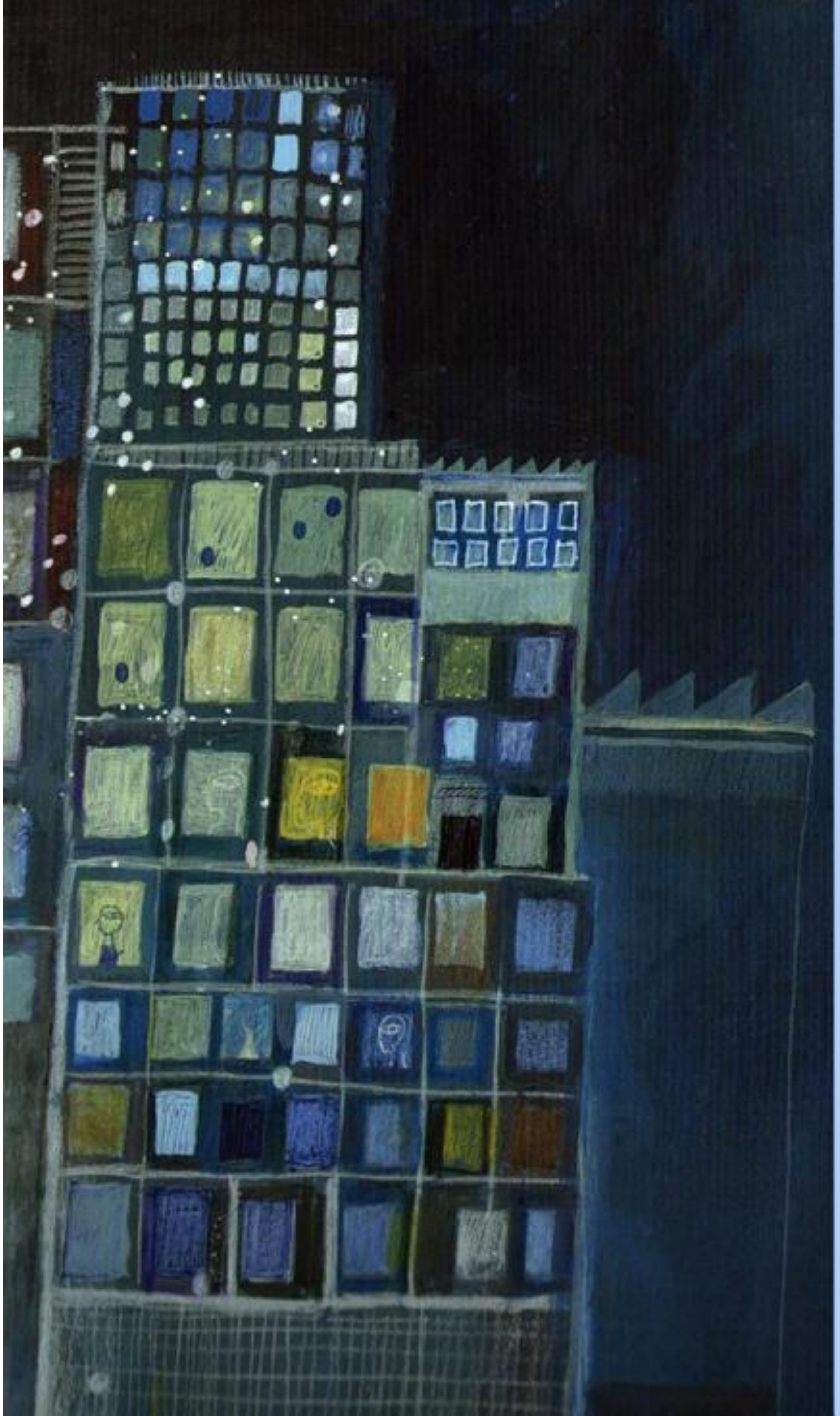


कुछ दिनों बाद वांगारी अपने भाइयों और चचेरे भाइयों के साथ खुशी-खुशी स्कूल जाने लगी! सही सवाल पूछने की हिम्मत करने के लिए वो अपने भाई, और दृढ निर्णय लेने के लिए अपनी माँ की शुक्रगुज़ार थी. शिक्षा ने वांगारी के जीवन को बदल दिया.

वांगारी सब कुछ जानना और समझना चाहती थी. स्कूल ने उसकी सफलता में मदद की. जब उन्होंने हाई-स्कूल डिप्लोमा पास किया, उस समय बहुत कम अफ्रीकी महिलाएं ही लिखना-पढ़ना सीखती थीं.







सीनेटर जॉन एफ. कैनेडी, जो भविष्य में अमेरिकी राष्ट्रपति बने, ने केन्या के छह सौ युवक-युवतियों को अमेरिका आकर पढ़ाई करने के लिए आमंत्रित किया. वांगारी उन छात्रों में से एक थीं.

अगले पांच सालों तक वांगारी ने बर्फ, गगनचुंबी इमारतों के जंगल, और ऐसे लोग देखे जो उसके जैसे बिल्कुल नहीं दिखते थे. यहां तक कि अमरीकी मक्का के खेत भी केन्या से बिल्कुल अलग रंग के थे.

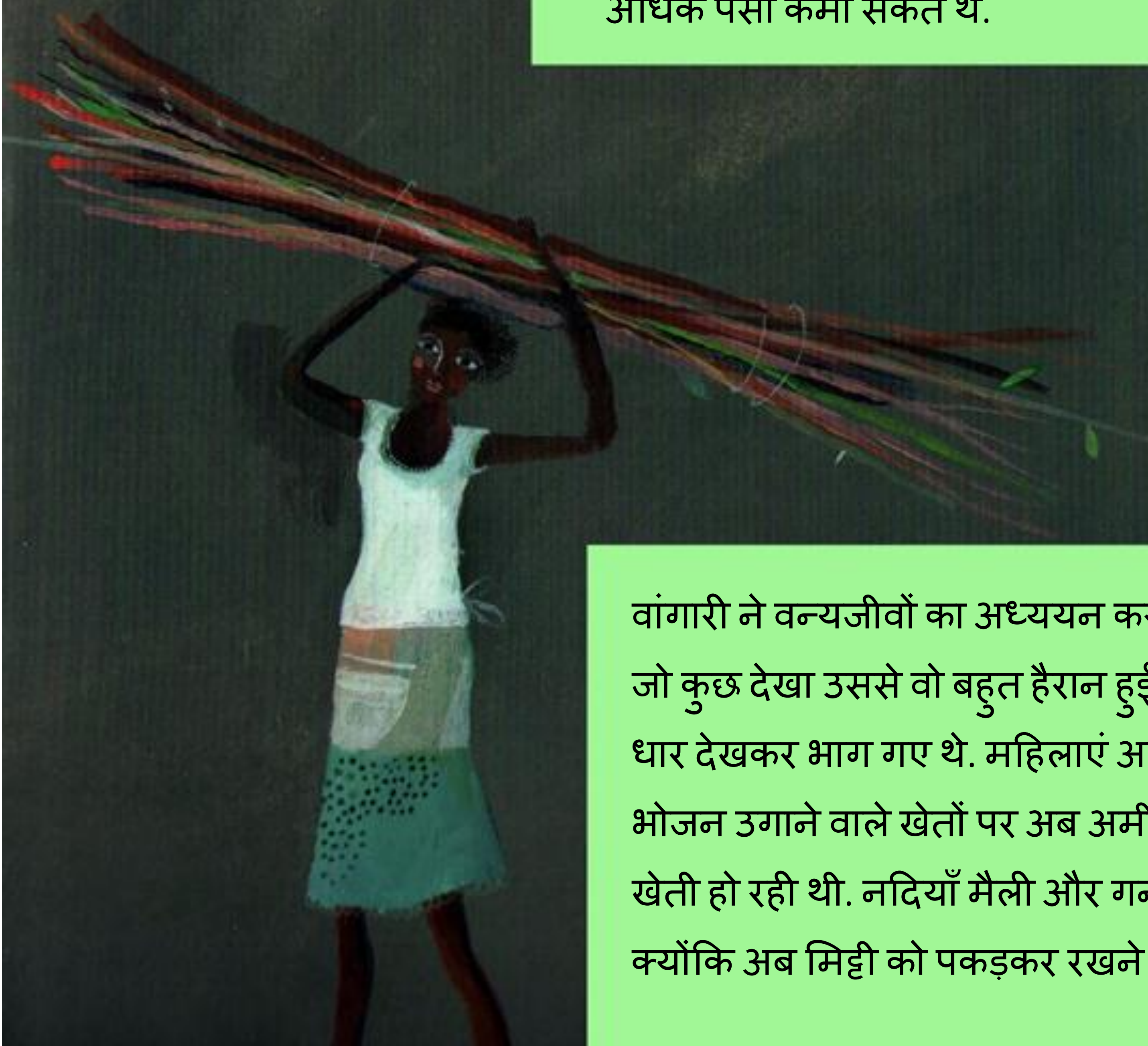
वांगारी को यह भी पता चला कि उस महान, स्वतंत्र देश में भी, कुछ स्थानों पर अश्वेत लोगों को जाने की मनाही थी. केन्या की तरह ही, अमरीका में कुछ स्कूल केवल गोरे बच्चों के लिए थे. 1960 के दशक में, अफ्रीकी-अमेरिकी लोगों ने रोष में आकर गोरे लोगों जैसे ही समान अधिकारों की मांग की.

उसी समय केन्या के स्थानीय लोगों का क्रोध भी एक विजय में बदला. दस साल से अधिक समय से, अश्वेत लोग अपनी जमीनों पर खेती करने और अपने देश पर शासन करने के अधिकार की मांग कर रहे थे. अंत में वे ब्रिटेन से स्वतंत्रता होने में सफल हुए.



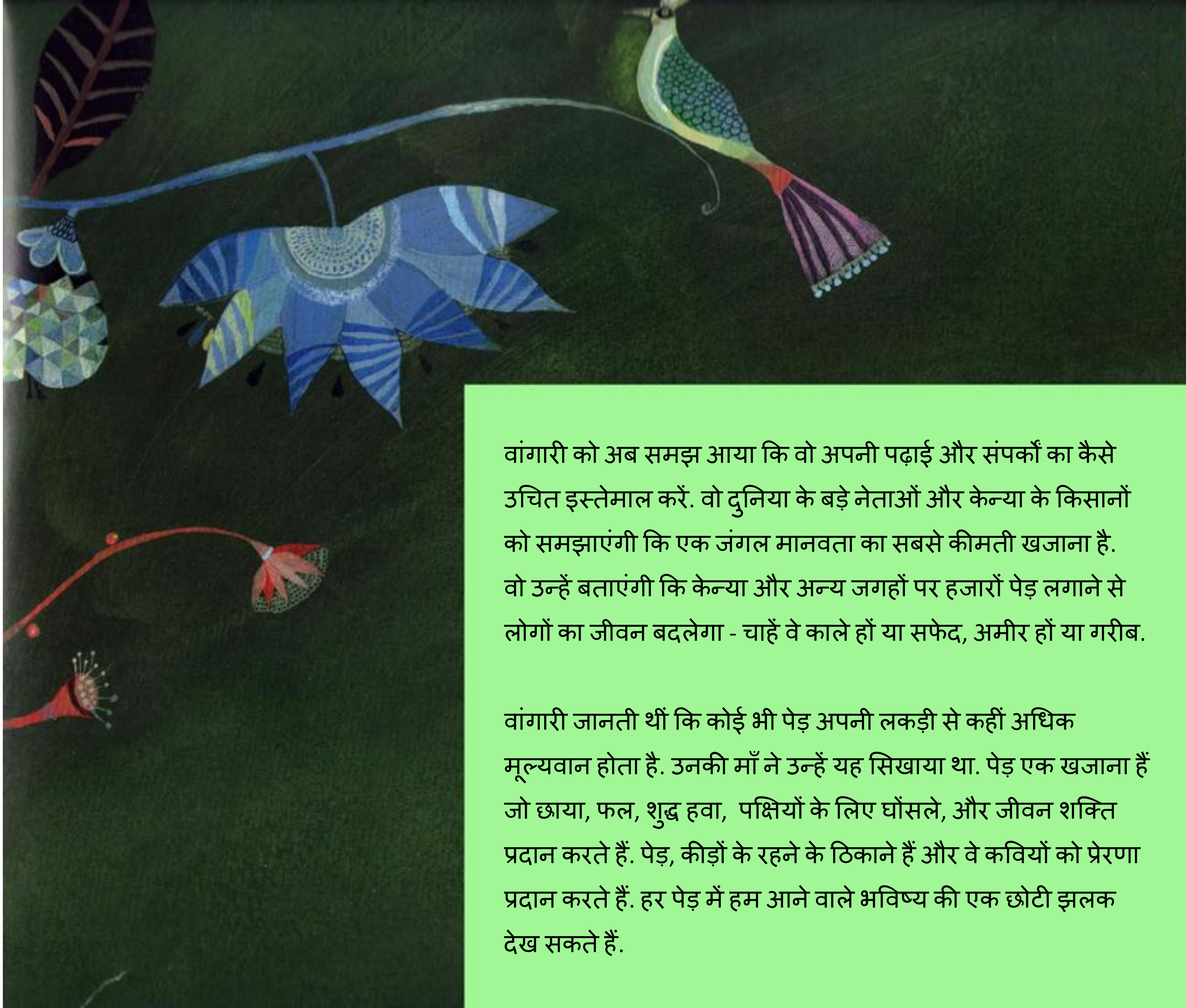
जब वांगारी घर वापिस लौटीं, तब ब्रिटिश उपनिवेशवादियों का केन्या पर राज्य खत्म हो चुका था. अब उनका देश आजाद था, लेकिन पेड़ अभी भी पराधीन थे - वे अभी भी कट रहे थे.

केन्या के लोग पेड़ों को काटकर वैसे ही बेच रहे थे जैसा कि ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने किया था. जहाँ पहले ऊंचे हरे-भरे पेड़ खड़े थे, उन्हें काटकर लोग उस ज़मीन पर अमीर देशों के लिए चाय, कॉफी और तम्बाकू की खेती कर रहे थे. ऐसा करके वे अधिक पैसा कमा सकते थे.



वांगारी ने वन्यजीवों का अध्ययन करने के लिए अपने पूरे देश की यात्रा की. उन्होंने जो कुछ देखा उससे वो बहुत हैरान हुईं. जंगली जानवर अब दुर्लभ थे - वे तेज़ आरी की धार देखकर भाग गए थे. महिलाएं अब अपने बच्चों को खिला नहीं पाती थीं, क्योंकि भोजन उगाने वाले खेतों पर अब अमीर लोगों के लिए चाय, कॉफी और तम्बाकू की खेती हो रही थी. नदियाँ मैली और गन्दी थीं - उनमें बारिश से मिट्टी बहकर आई थी, क्योंकि अब मिट्टी को पकड़कर रखने के लिए पेड़ों की जड़ें नहीं बची थीं.





वांगारी को अब समझ आया कि वो अपनी पढ़ाई और संपर्कों का कैसे उचित इस्तेमाल करें. वो दुनिया के बड़े नेताओं और केन्या के किसानों को समझाएंगी कि एक जंगल मानवता का सबसे कीमती खजाना है. वो उन्हें बताएंगी कि केन्या और अन्य जगहों पर हजारों पेड़ लगाने से लोगों का जीवन बदलेगा - चाहें वे काले हों या सफेद, अमीर हों या गरीब.

वांगारी जानती थीं कि कोई भी पेड़ अपनी लकड़ी से कहीं अधिक मूल्यवान होता है. उनकी माँ ने उन्हें यह सिखाया था. पेड़ एक खजाना हैं जो छाया, फल, शुद्ध हवा, पक्षियों के लिए घोंसले, और जीवन शक्ति प्रदान करते हैं. पेड़, कीड़ों के रहने के ठिकाने हैं और वे कवियों को प्रेरणा प्रदान करते हैं. हर पेड़ में हम आने वाले भविष्य की एक छोटी झलक देख सकते हैं.

वांगारी, दुनिया के सामने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना चाहती थीं, लेकिन बदलाव धीरे-धीरे ही आता है. वो इतना इंतजार नहीं कर सकती थीं. इसलिए 1977 में वांगारी ने बड़े पैमाने पर पेड़ लगाने के लिए "ग्रीन बेल्ट मूवमेंट" की स्थापना की.

उन्होंने एक गाँव से दूसरे गाँव की यात्रा की. अपने भाषणों में उन्होंने पेड़ों, जानवरों और बच्चों की पैरवी की. वर्तमान कठोर और कठिन होने के बावजूद उन्होंने लोगों से भविष्य के बारे में सोचने की अपील की. उन्होंने ग्रामीण लोगों को उनकी समस्याओं के बारे में स्थानीय भाषाओं में चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित किया.

उनके शब्द गांवों में, अखबारों के ज़रिये पहुंचे, और केन्याई सरकार और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों तक पत्रों के माध्यम से पहुंचे. वांगारी को पैसे जुटाने की सख्त जरूरत थी क्योंकि सैकड़ों-हजारों लापता पेड़ों को दुबारा लगाना एक महंगा काम था.





वांगारी ने पूरे केन्या में पेड़ों की नर्सरी लगाईं जिनका कार्यभार उन्होंने गांव की महिलाओं को सौंपा. हर पेड़ जो उगकर बड़ा होता था उसकी देखरेख करने वाली महिला को अलग से बोनस मिलता था.

जंगलों को बेचकर किस्मत बनाने वाले सरकारी अधिकारियों ने वांगारी को रोकने की भरपूर कोशिश की. वो कौन महिला है जो इतने आत्मविश्वास से उनका सामना कर रही थी? केन्या में तो महिलायें, पुरुषों की उपस्थिति में अपनी आँखें नीचे करके सिर्फ सुनती थीं.

वांगारी का मानना था कि आत्मविश्वास से भरी महिलाओं की, परिवार में, गाँव में और पूरे अफ्रीका में एक महत्वपूर्ण भूमिका थी. वांगारी शांत नहीं बैठ सकती थीं. अनगिनत बहनों की मदद से वो, "जिसका तेंदुए से संबंध हो" बिल्कुल हतोत्साहित नहीं हुईं. वो लगातार जंगल लगाती रहीं.







वांगारी ने यह निश्चित किया कि अब से वो किसी भी पेड़ को कटने नहीं देंगी. उन्होंने कभी भी अपनी आँखें नीची नहीं कीं, यहां तक कि जब उन्होंने राष्ट्रपति डैनियल ऐरप मोई का सामना किया. राष्ट्रपति मोई ने केन्या पर चौबीस साल तक शासन किया.

राष्ट्रपति मोई नैरोबी में, उहुरू पार्क के बीच में, एक साठ मंजिली इमारत का और खुद की एक भव्य मूर्ति का निर्माण करवाना चाहते थे. वांगारी ने उस प्रकल्प का पुरज़ोर विरोध किया. उन्होंने बुलडोजरों से लड़ने के लिए अपने दोस्तों की कई रैलियों निकालीं, जिससे राष्ट्रपति को उस प्रोजेक्ट को त्यागना पड़ा.

राष्ट्रपति मोई ने फिर करुरा के जंगल में एक विशाल रियल एस्टेट प्रोजेक्ट शुरू करने की योजना बनाई, जिससे लुप्त होने वाले नीले बंदरों और नदी के विशेष सूअरों को खतरा बढ़ता. वांगारी ने वहां भी राष्ट्रपति का विरोध किया. उन्होंने अपने बचाव के लिए दुनिया से अपील की, उन्होंने वहां तमाम पेड़ लगाए और अंत में राष्ट्रपति को वहां से वापस जाने को मजबूर किया.

विजय के बाद एक केन्याई आदमी ने उनसे कहा : "आप केन्या में खड़ी रहने वाली एकमात्र पुरुष हैं!"





लेकिन राष्ट्रपति मोई की सत्ता की खिलाफत करना बहुत मुश्किल था. वांगारी उनके लिए अब एक खतरा बन गई थीं. वो जानती थीं कि राष्ट्रपति उन्हें चुप कराने के लिए कुछ भी करेंगे - वो बहुत शक्तिशाली थे और प्रदर्शनकारियों की भीड़ पर पुलिस को गोली चलाने का आदेश देते थे.

वांगारी को कई बार अपमानित किया गया, मारा गया, चोट पहुंचाई गई और जेल में डाला गया, लेकिन फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी. हर बार रिहा होने के बाद, वो राजनीतिक कैदियों को आजाद करने के लिए लड़ती रहीं और यातना के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाती रहीं. वांगारी को जब मौत की धमकी मिलती तो उन्हें अक्सर केन्या के बाहर जाकर छिपना पड़ता था. लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी.



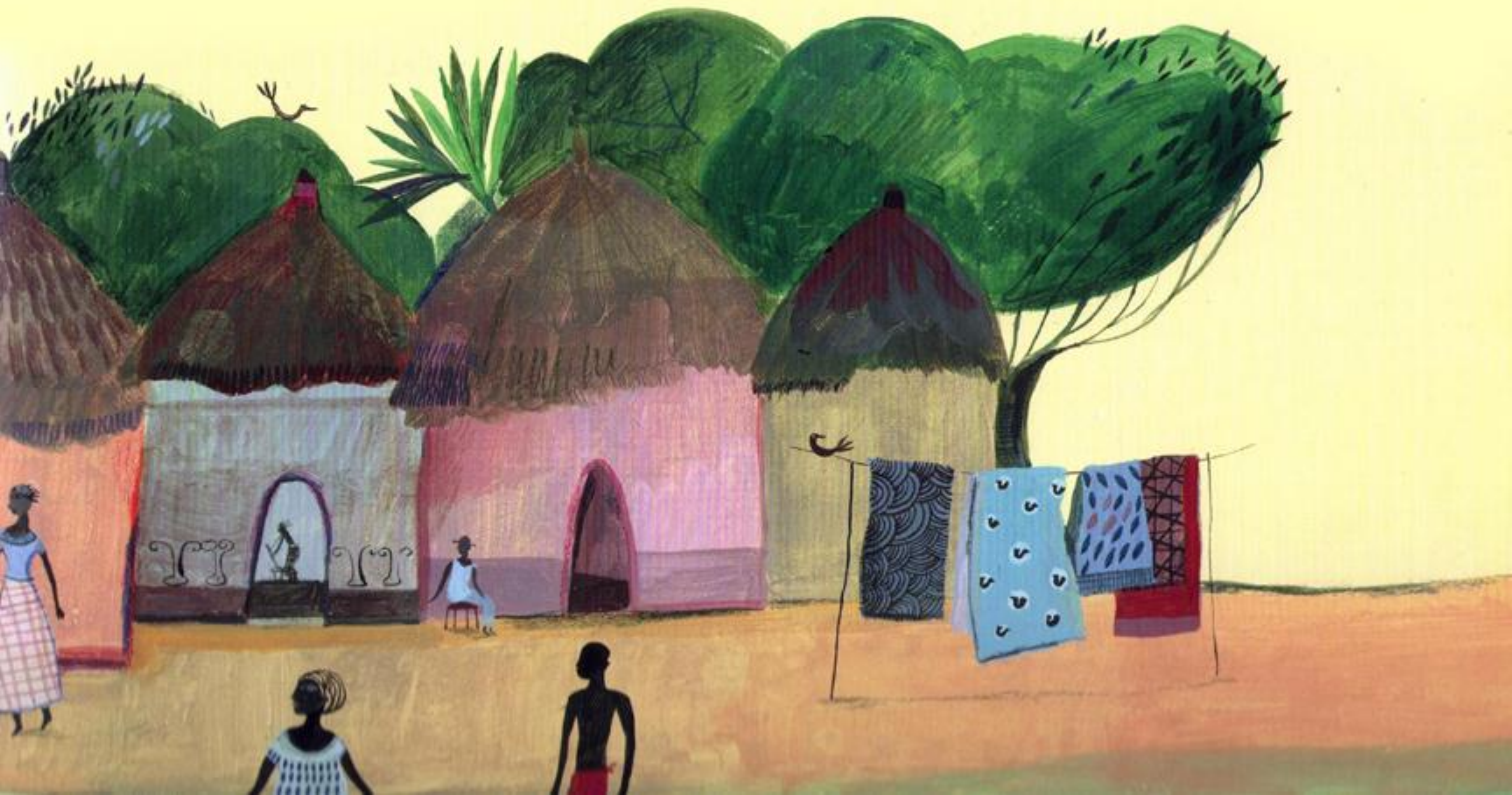


वांगारी अपने देश में लोकतंत्र को, पेड़ों की तरह विकसित करना चाहते थीं. वो मानती थीं कि अगर लोग देश के कानूनों को तय करने के लिए एक-साथ काम करेंगे, तो उनका देश ज़रूर मजबूत बनेगा.



उनका सपना था कि केन्या के बच्चे जंगलों के किनारे अंजीर के पेड़ों के नीचे साफ पानी के तालों में मेंढकों के साथ खेल सकें. वो चाहती थीं कि जब कभी बच्चों को भूख लगे तो वे खा सकें.

वांगारी को जल्दी ही पता चला कि पेड़ों को बचाने के लिए उन्हें और तमाम लड़ाइयां लड़नी होंगी. उन्होंने कई बार चुनाव भी लड़ा. उन्होंने एक पर्यावरण पार्टी भी बनाई, और विपक्ष पर राष्ट्रपति मोई को हारने के लिए ज़ोर डाला.





बढ़ते विरोध का सामना करते हुए, राष्ट्रपति मोई ने सत्ता में बने रहने के लिए लोगों को विभाजित किया. वो जानते थे कि जब जनजातियां आपस में एक-दूसरे से लड़ेंगी तो राष्ट्रपति उन्हें आसानी से नियंत्रित कर पाएंगे.

वांगारी और ग्रीन बेल्ट आंदोलन ने राष्ट्रपति मोई की सत्ता को कमज़ोर करने में मदद की. उन्होंने नर्सरी के पौधे दुश्मन जनजातियों को भेंट किए. उससे लोगों के बीच शांति स्थापित हुई.

धीरे-धीरे वांगारी द्वारा लगाए शांति के पेड़ों में फल लगने लगे. वांगारी ने सैनिकों को समझाया और जनजातियों के बीच दोस्ती कायम करने में उन्होंने सैनिकों की मदद ली.



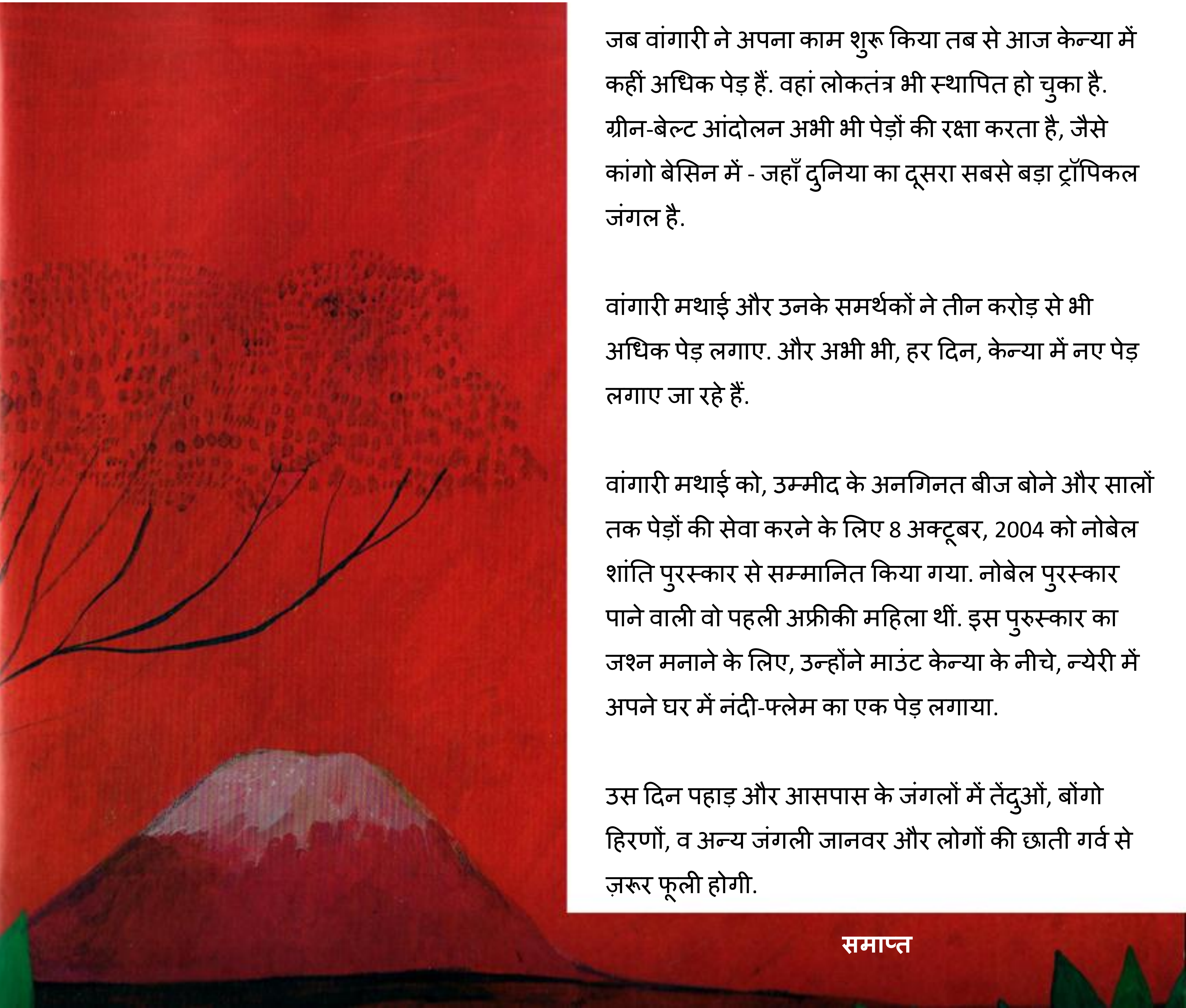




अंततः 2002 में राष्ट्रपति डैनियल ऐरप मोई चुनाव हारे. देश के नए संविधान के अनुसार राष्ट्रपति को रिटायर होना अनिवार्य था, इसलिए उस इलेक्शन में उनकी पार्टी चुनाव हार गई. वांगारी संसद के लिए चुनी गईं. नए राष्ट्रपति ने वांगारी को पर्यावरण, प्राकृतिक संसाधनों और वन्य जीवन का सहायक मंत्री नियुक्ति किया.

वांगारी को अब लोग प्यार से "मामा-मिती" या "पेड़ों की माँ" बुलाते थे. यहाँ से वांगारी की एक नई कहानी शुरू हुई. अब वांगारी के पास सही निर्णय लेने की क्षमता थी. अब वो केन्या को एक निष्पक्ष राष्ट्र बनाने के लिए काम कर सकती थीं – एक ऐसा राज्य जो महिलाओं, पुरुषों ..... और पेड़ों के पक्ष में काम करे!





जब वांगारी ने अपना काम शुरू किया तब से आज केन्या में कहीं अधिक पेड़ हैं. वहां लोकतंत्र भी स्थापित हो चुका है. ग्रीन-बेल्ट आंदोलन अभी भी पेड़ों की रक्षा करता है, जैसे कांगो बेसिन में - जहाँ दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा ट्रॉपिकल जंगल है.

वांगारी मथाई और उनके समर्थकों ने तीन करोड़ से भी अधिक पेड़ लगाए. और अभी भी, हर दिन, केन्या में नए पेड़ लगाए जा रहे हैं.

वांगारी मथाई को, उम्मीद के अनगिनत बीज बोने और सालों तक पेड़ों की सेवा करने के लिए 8 अक्टूबर, 2004 को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया. नोबेल पुरस्कार पाने वाली वो पहली अफ्रीकी महिला थीं. इस पुरुस्कार का जश्न मनाने के लिए, उन्होंने माउंट केन्या के नीचे, न्येरी में अपने घर में नंदी-फ्लेम का एक पेड़ लगाया.

उस दिन पहाड़ और आसपास के जंगलों में तेंदुओं, बोंगो हिरणों, व अन्य जंगली जानवर और लोगों की छाती गर्व से ज़रूर फूली होगी.

समाप्त





